

डॉ. एंथनी जे. टोमासिनो, द टेन कमांडमेंट्स

सत्र 2: आज्ञा 1: कोई अन्य देवता नहीं

यह डॉ. एंथनी जे. टोमासिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2 है, आज्ञा 1: कोई अन्य देवता नहीं।

तो हम दस आज्ञाओं के माध्यम से जाना शुरू करने जा रहे हैं, और हम बिल्कुल शुरुआत से शुरू करने जा रहे हैं, आज्ञा संख्या एक से शुरू करने के लिए एक बहुत अच्छी जगह, आपके पास कोई अन्य देवता नहीं होगा।

अब, कल्पना करें कि आप एक घर बनाने जा रहे हैं, है न? अब, आप शायद यह सब अकेले नहीं करने जा रहे हैं; आप अपने लिए घर बनाने में बहुत से लोगों को शामिल करने जा रहे हैं। तो, आप किसे लाने जा रहे हैं? ठीक है, आप शायद नींव बनाने के लिए किसी को लाने जा रहे हैं, आप प्लंबिंग करने के लिए किसी को लाने जा रहे हैं, आप वायरिंग करने के लिए किसी को लाने जा रहे हैं, आप ड्राईवॉल करने के लिए किसी को लाने जा रहे हैं, आप छत बनाने के लिए किसी को लाने जा रहे हैं, ये सभी अलग-अलग लोग विशेषज्ञ हैं जो आपके घर के एक विशेष क्षेत्र में काम कर रहे हैं। अब, कल्पना करें कि एक दिन आप यह देखने के लिए अपनी संपत्ति पर आते हैं कि काम कैसे चल रहा है, और आप देखते हैं कि वे सभी लोग चले गए हैं।

और इसके बजाय, वहाँ सिर्फ एक आदमी है, जो आपकी संपत्ति, आपके घर पर काम कर रहा है। और वह पागलों की तरह काम कर रहा है और लगता है कि वह बहुत बढ़िया काम कर रहा है। और आप उस आदमी के पास जाते हैं, आप कहते हैं, अरे, क्या हो रहा है? और वह कहता है, मैं बॉब हूँ, और मैं आपके लिए आपका घर बनाने जा रहा हूँ।

और आप कहते हैं, सच में? वह कहता है, हाँ। तो मैं पूरा काम करूँगा। मैं योजनाएँ बनाऊँगा।

मैं तुम्हारा तहखाना खोद दूँगा। मैं कंक्रीट डाल दूँगा। मैं नलसाज़ी लगा दूँगा, वायरिंग करूँगा, और ड्राईवॉल लगा दूँगा, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करूँगा।

मैं यह काम उन दूसरे लोगों से बेहतर तरीके से करूँगा। मैं यह काम उन सभी दूसरे लोगों से सस्ता और तेज़ करूँगा। बॉब आपको अपनी योग्यताएँ दिखाता है।

वे बिल्कुल बेदाग हैं। और आप कहते हैं, वाह, यह बहुत अच्छा लग रहा है। और फिर आप कहते हैं, ठीक है, तो इसमें क्या दिक्कत है? और बॉब कहते हैं, यह बात है।

अगर तुम मेरे साथ जाओगे, तो तुम्हारे द्वारा नियुक्त किए गए सभी अन्य लोगों को जाना होगा। अगर तुम दीवार में पेंच लगाने के लिए किसी को बुलाने का भी इस्तेमाल करोगे, तो हमारा पूरा अनुबंध रद्द हो जाएगा। और मैं तुम्हें अदालत में ले जाऊँगा।

अब, आप जानते हैं, आप सुन रहे हैं कि आप बॉब को यहाँ अपने व्यक्ति के रूप में नियुक्त करने में थोड़ा अनिच्छुक हो सकते हैं, क्योंकि यह मानने के लिए आपके हिस्से पर बहुत अधिक भरोसा होना चाहिए कि यह एक व्यक्ति उन सभी कामों को कर सकता है जो ये सभी अन्य लोग कर रहे थे। खैर, प्राचीन इस्राएलियों की दुनिया में आपका स्वागत है। क्योंकि यह वास्तव में वही था जिसके बारे में पहली आज्ञा उनके लिए बात कर रही थी।

मिस्र की भूमि में, जहाँ इस्राएली काफी समय से थे, निस्संदेह, उनके पास बहुत सारे देवता थे, मिस्रियों के पास बहुत सारे देवता थे, और ऐसा लगता है कि वे हर समय बढ़ रहे हैं। और शायद इस बात पर कोई संदेह नहीं है कि इस्राएली खुद मिस्रियों के कुछ देवताओं की पूजा करते थे। मेरा मतलब है, जब रोम में रोमनों की तरह व्यवहार करें, जब मिस्र में मिस्रियों की तरह व्यवहार करें, है न? तो बहुत संभावना है कि इस्राएली इन मिस्री देवताओं में से कुछ की पूजा में शामिल थे।

वास्तव में, यहोशू 24 में यहोशू ने भी यही कहा है, वह कहता है, तुम किसकी पूजा करने जा रहे हो? क्या तुम उन देवताओं की पूजा करने जा रहे हो जिनकी तुम मिस्र में पूजा करते हो? हाँ। या शायद वे देवता जिनकी तुम्हारे पूर्वज नदियों के पार की भूमि में पूजा करते थे, आप जानते हैं, मेसोपोटामिया के देवता, संभवतः वे उनकी भी पूजा करते हैं। क्या तुम उस भूमि के देवताओं की पूजा करने जा रहे हो जहाँ तुम जा रहे हो? हम जानते हैं कि प्राचीन निकट पूर्व में लगभग सभी जगह बाल की पूजा विभिन्न रूपों में की जाती थी। आप जानते हैं, क्या इस्राएली भी बाल की पूजा करते थे? लेकिन अब प्रभु उनसे कह रहे हैं, यदि तुम मेरे लोग बनने जा रहे हो, तो तुम्हें उन सभी अन्य देवताओं को त्यागना होगा, और तुम केवल मेरी ही पूजा करने जा रहे हो।

और इसलिए यह इस्राएलियों के लिए शायद एक प्रकार का अपमानजनक प्रस्ताव प्रतीत हुआ होगा कि उन्हें बताया जा रहा है कि उन्हें अपना सब कुछ त्यागना होगा। उन लोगों के, उन सभी प्राणियों के जिन पर उन्होंने भरोसा किया था और अपना सारा भरोसा एक ईश्वर और केवल एक ईश्वर पर रखा था। अब, यहाँ इस्राएलियों को जो बताया जा रहा है, उस पर पूरी तरह से विचार करने के लिए, हमें एक प्रश्न से शुरू करना होगा कि ईश्वर का क्या अर्थ है? इस्राएल के लिए एक ईश्वर या अनेक ईश्वरों का क्या अर्थ था? ईश्वर क्या था? मैं आधुनिक हॉलीवुड से थोड़ा चकित हूँ, जहाँ ऐसा लगता है, आप जानते हैं, कि इनमें से कुछ कहानियों में सब कुछ ईश्वर हो सकता है। और ऐसा लगता है, क्या, ईश्वर का गठन किससे होता है? और आपको, आप जानते हैं, मार्वल की दुनिया में थोर जैसा कुछ मिला है, जो ईश्वर है, और अपने तरीके से एक तरह का मानवीय लगता है, लेकिन, लेकिन वास्तव में वह कौन सा गुण है जो किसी को ईश्वर बनाता है? और यह एक कठिन प्रश्न है, मुझे कहना होगा।

मैंने प्राचीन ग्रीस में इस पर काफी शोध किया है, और, आप जानते हैं, यूनानी वास्तव में उन पहले लोगों में से एक थे जिन्होंने वास्तव में अनुमान लगाया था कि भगवान की प्रकृति क्या थी। और वे इस उल्लेखनीय परिभाषा के साथ आए, जहाँ उन्होंने कहा, भगवान क्या है? एक अमर मनुष्य। एक आदमी क्या है? एक नश्वर भगवान।

अगर आप यूनानी देवताओं के व्यवहार को देखें, तो आप समझ सकते हैं कि वे कभी-कभी इस निष्कर्ष पर क्यों पहुँचते हैं। लेकिन ईश्वर क्या है? हिब्रू बाइबिल कभी भी इसकी परिभाषा नहीं देती। यह हमें कभी नहीं बताती।

आपको सिर्फ़ एक ही ईश्वर मानना है। खैर, इसका क्या मतलब है? मुझे किसी चीज़ में से एक मानना है, लेकिन मुझे नहीं पता कि वह क्या है। हमारे पास कभी भी दैवीय गुणों की सूची नहीं होती।

सर्वशक्तिमान या धर्मी या अमर जैसी बातें, जैसे कि यूनानियों ने की थीं। और हमें यह भी पहचानना होगा कि वे शब्द भी, और हमारे पास सर्वशक्तिमान शब्द है, जिसका अनुवाद पुराने नियम में किया गया है, शब्द सर्वोच्च या इस तरह का कुछ। कभी-कभी अनुवाद अच्छे होते हैं, कभी-कभी इतने अच्छे नहीं होते।

लेकिन उनके अर्थ हमारे समय के समान नहीं हैं। पुराने नियम में सर्वशक्तिमान का अर्थ वही नहीं था जो आधुनिक धर्मशास्त्री के लिए सर्वशक्तिमान का अर्थ है। बस इसके अर्थ अलग-अलग थे।

वे समझते थे कि परमेश्वर शक्तिशाली और ताकतवर है, लेकिन उन्होंने वास्तव में इस बात पर विचार नहीं किया कि शाब्दिक रूप से कुछ भी करने में सक्षम होने का क्या मतलब है। उन्होंने पुराने नियम में कभी भी उस अवधारणा की खोज नहीं की। इसलिए, यहाँ धार्मिक निहितार्थों का एक अलग सेट है, अगर आप जो कुछ भी कर रहे हैं उसे एक अर्थ में धर्मशास्त्र कह सकते हैं।

कुछ प्राचीन पूर्वी ग्रंथों से हमें इस बारे में कुछ बुनियादी जानकारी मिलती है कि प्राचीन दुनिया के लोग देवताओं के बारे में कैसे सोचते थे। और क्या इस्राएली भी इनमें से कुछ बातों पर विश्वास करते थे, यह हम नहीं जानते। मेरा मतलब है, अगर वे एक ही परिवेश का हिस्सा थे, तो शायद वे ऐसा करते हों।

लेकिन कुछ विचार। ईश्वर के लिए विशिष्ट सेमिटिक शब्द स्पष्ट रूप से शक्तिशाली अर्थ वाले शब्द से संबंधित है। यह शब्द एल है, यह शब्द कई अलग-अलग रूपों में प्रकट होता है, प्राचीन अक्कादियन और अन्य मेसोपोटामियाई रूपों में एलु।

हमारे पास एल शब्द है, जो हिब्रू और विभिन्न कनानी बोलियों में भी पाया जाता है। और इस शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर ईश्वर के अर्थ में किया जाता है। सुमेरियन शब्द, डिंगर, हम नहीं जानते कि इसका क्या मतलब है।

मिस्र का शब्द, फिर से, हम वास्तव में नहीं जानते। इसलिए, कम से कम मध्य पूर्व में, ईश्वर का विचार शक्ति, ताकत की धारणा से जुड़ा हुआ लगता है, न कि अनंत काल या पवित्रता या धार्मिकता की धारणा से। इस तरह के विचार गुण हो सकते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि ईश्वर का सबसे बुनियादी साझा गुण शक्ति का विचार है।

ऐसा लगता है। प्राचीन निकट पूर्व के अधिकांश हिस्सों में, यह समझ थी कि देवता अस्तित्व में आए थे। इज़राइल के बाहर, ऐसा प्रतीत नहीं होता कि ऐसे ईश्वर की समझ है जो अनंत काल से अस्तित्व में है।

स्वर्ग और पृथ्वी और कुछ ब्रह्मांड, वे अनंत काल से अस्तित्व में हैं। देवता नहीं थे। देवता पैदा हुए थे।

देवताओं को किसी तरह से बनाया गया था, या देवताओं ने खुद को बनाया था। लेकिन यह समझ नहीं थी कि वे हमेशा से अस्तित्व में थे। हमें और क्या मिला? खैर, कई देवता प्राकृतिक घटनाओं से जुड़े थे।

पिछले व्याख्यान में, हमने प्राचीन बेबीलोन में न्याय के देवता शमाश के बारे में बात की थी। शमाश का मतलब सूर्य है, वही शब्द। यह स्पष्ट है कि सूर्य का विचार न्याय के विचार से इस अर्थ में संबंधित हो सकता है कि सूर्य ही वह है जो चीजों को प्रकट करता है, चीजों को स्पष्ट करता है।

और न्याय को कभी-कभी चीजों को स्पष्ट और स्पष्ट करने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता था। लेकिन अन्य चीजें, जैसे कि फसल उगाना, चंद्रमा, हवा का बहना और यहाँ तक कि विशेष प्रकार की हवाएँ भी विशेष देवताओं से जुड़ी हो सकती हैं। इसलिए बहुत सारे अलग-अलग देवता प्राकृतिक घटनाओं से जुड़े हैं।

और ऐसे भी मामले हैं, जिनमें भगवान किसी न किसी तरह से जीवन की प्रक्रियाओं से जुड़े थे, जैसे कि कुछ भगवान बच्चे पैदा करने से जुड़े थे, या कुछ भगवान महामारी से जुड़े थे। मध्य पूर्वी लोग एक तरह से भगवान को सुपरचार्ज्ड इंसानों के रूप में समझते हैं जो स्वर्ग में रहते थे। और भगवान और इंसान में क्या अंतर था? खैर, मध्य पूर्व के ज्यादातर लोगों के लिए, मुख्य विचार यह था कि वे अपने तरीके से अमर थे।

और फिर हम इसकी तुलना ग्रीक हेराक्लिटस से कर सकते हैं, जिन्होंने कहा था, देवता क्या हैं? अमर पुरुष। ऐसा ही विचार प्राचीन निकट पूर्वी संस्कृतियों में से कई में मौजूद था। मूल रूप से, उन्होंने देवताओं को लोगों की तरह माना, विशेष रूप से राजाओं की तरह, या कुछ मायनों में अन्य लोगों की तरह।

और उनके पास एक खास तरह की विशेष शक्ति थी। हम इसे मानवशास्त्रीय शब्द का उपयोग करके मन कह सकते हैं। मिस्र में, वे हेका रखने वाले देवताओं की बात करते थे, जो कि मिस्र में जादू के लिए भी इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है।

तो आपके पास जितना ज़्यादा हेका होगा, आप उतने ही शक्तिशाली देवता होंगे। ठीक है? तो हाँ, मिस्र के लोग अपने देवताओं को मानव और प्राणी-रूपी दोनों के रूप में मानते थे, प्राणी-रूपी का मतलब है ऐसे देवता जो जानवरों जैसे दिखते हैं। उनके पास एक जादुई ऊर्जा थी जो उन्हें भर देती थी।

तो यह अलग बात है। मध्य पूर्व में कोई भी प्राणीरूपी देवता नहीं हैं। लेकिन मिस्र में, लगभग सभी देवताओं का एक पशु रूप था।

और कभी-कभी यह किसी न किसी तरह से आंशिक रूप से पशु और आंशिक रूप से मनुष्य होता था। मनुष्यों के प्रति देवताओं का दृष्टिकोण एक मिथक से दूसरे मिथक में, एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में व्यापक रूप से भिन्न होता है। कुछ संस्कृतियों में, ऐसा लगता है, अगर आप सुमेर से आने वाले प्राचीन बेबीलोन के मिथकों को पढ़ते हैं, जिन्हें बाद में पारित किया गया और पारित होने के साथ बदल दिया गया, तो धारणा यह है कि मनुष्यों को शुरू में वह काम करने के लिए बनाया गया था जो देवता नहीं करना चाहते थे।

और अधिकांश भाग के लिए, जब तक मनुष्य कोई परेशानी नहीं पैदा करते, देवता उन्हें अनदेखा करने को तैयार थे। और महाप्रलय की पूरी कहानी इस विचार से आती है कि मनुष्य इतना शोर मचा रहे थे और इतनी परेशानी पैदा कर रहे थे कि देवता रात को सो नहीं पाते थे। और इसलिए उन्होंने सभी मनुष्यों को मिटा देने का फैसला किया।

लेकिन फिर, महान बाढ़ के बाद, बेबीलोन के स्रोतों के अनुसार, मनुष्यों ने एक बलिदान किया। और देवताओं ने मनुष्यों द्वारा किए गए बलिदान की मीठी खुशबू को सूँघकर कहा, अरे, शायद मनुष्य इतने बुरे नहीं हैं। तो विचार यह है कि, एक तरह से, मनुष्य देवताओं का पक्ष जीतने में कामयाब रहे।

अन्य मामलों में, हम देखते हैं कि वे समझते थे कि देवताओं में मानवता के प्रति पितृत्वपूर्ण समझ या यहाँ तक कि मातृत्वपूर्ण समझ अधिक थी। और अन्य मामलों में, और कुछ देवताओं के कुछ मामलों में, मानवता के प्रति लगभग अधिक शत्रुता थी। इसलिए बहुत सारे अलग-अलग विचार.

देवता अपने सार का कुछ हिस्सा वस्तुओं में डाल सकते थे। और हम इसके बारे में तब बात करेंगे जब हम छवियों के बारे में अगली आज्ञा के बारे में बात करेंगे। तो आम तौर पर, प्राचीन दुनिया के देवता विशेषज्ञ थे।

और यहीं से मेरी शुरुआती कहानी वापस आती है। आप अलग-अलग देवताओं को देखते हैं। और मिस्र के लोग इसे बहुत आसान बनाते हैं क्योंकि उनके पास ऐसी तस्वीरें हैं जो दर्शाती हैं कि यहाँ क्या हो रहा है।

यह तुम्हारा हरा देवता है। हम कैसे जानते हैं? क्योंकि उसके सिर के ऊपर अनाज का एक डंठल चिपका हुआ है। यहाँ तूफान देवता को हाथ में बिजली के बोल्ट के साथ दर्शाया गया है।

प्रेम की देवी और युद्ध की देवी। किसी कारण से, ये दोनों लोगों के दिमाग में एक साथ चलते हैं। सूर्य देवता, जिनके सिर के ऊपर सूर्य चक्र है।

घर, चूल्हा और, ज़ाहिर है, इंटरनेट की देवी बस्टेट हैं। और हमारे यहाँ चंद्र देवता हैं, जिनके सिर पर अर्धचंद्र है। तो, आम तौर पर, इनमें से प्रत्येक का अपना क्षेत्र या अपना क्षेत्र होता है जिसमें वे काम करते हैं।

बहुत कम देवताओं को ही सर्वव्यापी शक्ति माना जाता था जो सब कुछ नियंत्रित करती थी। कभी-कभी मर्दुक भी काफी करीब आ जाता था। और मर्दुक के बारे में कुछ कविताएँ भी हैं।

वह बेबीलोन के लोगों का मुख्य तूफान देवता था। लेकिन कुछ समय बाद, मर्दुक के बारे में उनकी कुछ कविताओं में, उन्होंने मर्दुक को सभी अलग-अलग क्षेत्रों पर इन सभी विभिन्न शक्तियों के रूप में वर्णित किया। लेकिन अधिकांश भाग के लिए, देवता अपने क्षेत्रों में ही रहे।

इसलिए अगर आप सफल फ़सल चाहते थे, तो आप युद्ध के देवता से प्रार्थना नहीं करते थे। आप बारिश के देवता या खेतों के देवता से प्रार्थना करते थे। अगर आप बच्चा चाहते थे, तो आप उस देवता से प्रार्थना करते थे जो संतानोत्पत्ति का संरक्षक था।

आप विशेषज्ञों के पास गए। और वे सभी अलग-अलग विशेषज्ञ अपने क्षेत्र में अच्छे थे। और इसलिए आपने यह सुनिश्चित किया कि विभिन्न समयों पर, आपने उन्हें सभी तरह की सेवा दी।

लेकिन अपने जीवन के उन खास समयों पर, आप किसी खास देवता के पास जाते हैं जिसकी आपको मदद की ज़रूरत होती है और जिसकी आपको ज़रूरत होती है। तो, बड़े देवताओं के अलावा, और अक्सर ये राष्ट्रीय देवता होते हैं जिनके बारे में मैं यहाँ बात कर रहा हूँ, जैसे कि मर्दुक ज़्यादातर बेबीलोन का संरक्षक देवता है। और आपके पास एल और बाल हैं।

यह पूरी बात थोड़ी जटिल है। लेकिन आपके पास एल है, जो सीरियाई लोगों के संरक्षक प्रमुख पिता की तरह है, और फिर बाल, जो युवा तूफान देवता की तरह है जो एक तरह से उसे विस्थापित करता है। लेकिन कुछ जीव जिन्हें हम शैतान या राक्षस या यहां तक कि शैतान की तरह समझते हैं, उन्हें कभी-कभी प्राचीन ग्रंथों में देवता कहा जाता था।

यहाँ यह आदमी, यह बेज है। और वह मिस्र से एक प्रजनन प्रकार का देवता था। और उसे एक बौने की तरह चित्रित किया गया था।

और फिर भी उन्हें एक देवता और संतानोत्पत्ति के संरक्षक के रूप में पूजा जाता था। व्यक्तियों या परिवारों के पास अक्सर व्यक्तिगत देवता होते थे जो उनके लिए मध्यस्थता करते थे। और आप इन्हें संतों की तरह मान सकते हैं, क्योंकि हमारे पास इनमें से कुछ व्यक्तिगत देवताओं के लिए प्रार्थनाएँ हैं, जहाँ आप व्यक्तिगत ईश्वर से आपके लिए, बड़े ईश्वर से मध्यस्थता करने के लिए कहते हैं।

मैं वास्तव में बाल को परेशान नहीं करना चाहता, लेकिन मैं अपने निजी भगवान से बात करूंगा, और मेरा निजी भगवान अंदर जाएगा और मेरे लिए बाल के पास एक संदेश ले जाएगा। ठीक है? और इन देवताओं को छवियों के साथ दर्शाया गया था। हिब्रू में, हमारे पास टेराफिम नामक ये चीजें हैं।

यह उन शब्दों में से एक है जिसके बारे में कोई नहीं जानता कि यह कहाँ से आया है या इसका क्या मतलब है। रब्बी यह दावा करने की कोशिश करते हैं कि यह ऐसे शब्द से आया है जिसका मतलब कुछ ऐसा है जैसे कि तिरस्कृत या घृणित या कुछ और। इसका कोई आधार नहीं है।

तो हाँ, वास्तव में, यह शब्द एक रहस्य है। लेकिन अक्सर इसे हमारी बाइबल में केवल छवियों के रूप में अनुवादित किया जाता है, कभी-कभी इसे टेराफिम के रूप में छोड़ दिया जाता है। लेकिन इस आदमी मीका के पास एक मंदिर था, और उसने एक एपोद और टेराफिम बनाया और अपने एक बेटे को स्थापित किया, जो उसका पुजारी बन गया।

टेराफिम, वैसे, यह हिब्रू बहुवचन रूप है, लेकिन आमतौर पर इसका मतलब एकवचन के रूप में होता है। और यह एकवचन है। यह बहुत हद तक एलोहिम शब्द जैसा है।

एलोहिम शब्द का अर्थ ईश्वर होता है। यह हिब्रू का बहुवचन रूप है, और इसे हम महिमा या शक्ति या ताकत का द्वार कहते हैं। जब आप किसी चीज़ के बारे में विशेष रूप से शक्तिशाली के रूप में सोचते हैं, तो कभी-कभी आप बहुवचन रूप का उपयोग करते हैं।

और ऐसा लगता है कि यहाँ टेराफिम के मामले में भी यही बात है, क्योंकि अक्सर इस शब्द का इस्तेमाल वहाँ किया जाता है जहाँ यह स्पष्ट रूप से एक ही वस्तु को संदर्भित करता है। लेकिन न्यायियों की पुस्तक में मीका के पास एक एपोद है, जो किसी तरह का एक भविष्यवाणी करने वाला उपकरण है, और उसके पास एक टेराफिम, एक देवी, एक व्यक्तिगत भगवान है, जो उसके मंदिर के पीछे है। अब यह आदमी, ज़ाहिर है, एक इज़राइली है।

वह एक अच्छा यहूदी लड़का है, लेकिन यह एक कालभ्रम है। लेकिन वह एक अच्छा इस्राएली लड़का है और भगवान की पूजा करता है, लेकिन उसके पास अपने निजी मंदिर में उसका निजी भगवान भी है। मीकल, मीकल कौन है? वह राजा दाऊद की पत्नी थी।

खैर, इस समय राजा दाऊद नहीं, बल्कि दाऊद की पत्नी, राजा शाऊल की बेटी। मीकल ने टेराफिम लिया, और उसने इसे बिस्तर में रख दिया। यह तब की बात है जब शाऊल दाऊद को मारने की कोशिश कर रहा था, और दाऊद को इसके बारे में पता चल गया।

और इसलिए दाऊद को शहर से बाहर ले जाया जा रहा था, और शाऊल को गुमराह करने के लिए, उन्होंने शाऊल से कहा कि दाऊद बीमार है। और उसने जो किया वह यह था कि उसने टेराफिम, घर की मूर्ति को लिया, उसे बिस्तर में रख दिया, और उसके चारों ओर कंबल डाल दिया ताकि ऐसा लगे कि बिस्तर में कोई है। अगर यह मूर्खतापूर्ण लगता है, तो यह है, और मेरा मानना है कि यह मूर्खतापूर्ण लगने के लिए था।

लेकिन किसी भी हालत में, यह ऐसा है, ठीक है, हमारे पास एक भगवान है, और हम उसे यहाँ बिस्तर पर रख देंगे और दिखावा करेंगे कि वह डेविड है। हाँ। टेराफिम के लिए यह पूरी तरह से बकवास है।

जकर्याह की पुस्तक के अनुसार, भविष्यवक्ता झूठ देखता है। सपने देखने वाले झूठे सपने बताते हैं और खाली सांत्वना देते हैं। इसलिए इन चीजों का इस्तेमाल लंबे समय तक इज़राइल में किया जाता था, और उन्हें निश्चित रूप से मूल रूप से छोटे देवता माना जाता था।

और वास्तव में, राहेल की कहानी में, और जब वह अपने पिता लाबान से भाग रही थी, तो वह अपने साथ टेराफिम ले गई और उसे जमीन पर रख दिया और उस पर बैठ गई। और जब लाबान ने उन्हें पकड़ लिया, तो उसने कहा, तुमने मेरे देवताओं को क्यों ले लिया? तो स्पष्ट रूप से, विचार यह था कि मूर्ति, टेराफिम, दिव्यता, ईश्वर से जुड़ी थी। तो, प्राचीन निकट पूर्व के इन अन्य देवताओं में से कुछ से इज़राइल का भगवान कैसे अलग है? खैर, सबसे पहले, मूसा के समय में, शायद भगवान की लोकप्रिय अवधारणा पड़ोसियों के समान थी।

सच तो यह है कि ये लोग अज्ञानी थे। इस समय, वे अपने ईश्वर के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते। वे सीखने जा रहे हैं।

वे बहुत कुछ सीखने जा रहे हैं। लेकिन इस समय, वे शायद ईश्वर को अनेक ईश्वरों में से एक के रूप में सोच रहे हैं। और यहाँ, इस ईश्वर में यह कहने की हिम्मत है कि आप किसी और की पूजा नहीं कर सकते।

ठीक है, यहोवा, आपकी विशेषता क्या है? ऐसा क्या है जिसमें आप विशेष रूप से अच्छे हैं? मुझे लगता है कि ऐसी परिस्थितियों में उनके लिए यह पूछना एक सामान्य प्रश्न होता। उन्होंने स्पष्ट रूप से ईश्वर को मानव रूप में माना, चाहे उन्होंने ईश्वर को मानव के रूप में माना हो। मुझे नहीं लगता कि ऐसा है।

लेकिन उन्होंने ईश्वर के बारे में बहुत ही मानवीय दृष्टिकोण से सोचा। ईश्वर के हाथ थे। ईश्वर का एक सिर था।

भगवान के पास कहने के लिए एक पीठ भी थी, आप जानते हैं। वह कहानी याद कीजिए जहाँ मूसा ने भगवान का चेहरा देखने के लिए कहा था। और भगवान ने कहा, नहीं, तुम मेरा चेहरा नहीं देख सकते।

लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं क्या करूँगा। मैं तुम्हें एक चट्टान की दरार में डाल दूँगा। मैं चट्टान की दरार पर अपना हाथ रखूँगा।

मैं आगे बढ़ जाऊँगा। और आगे बढ़ने के बाद, मैं अपना हाथ हटा लूँगा। और जब मैं आगे बढ़ूँगा तो आप मेरा पिछला हिस्सा देख सकते हैं।

और इसलिए, हाँ, यह कहानी स्पष्ट रूप से एक बहुत ही मानवीय प्रकार के ईश्वर को दर्शाती है, बस एक बहुत बड़ा मानवीय प्रकार का ईश्वर। यहोवा इसाएल का ईश्वर था। हाँ, एक बार जब वे उस वाचा को बनाते हैं, तो यह एक ऐसा रिश्ता है जो यह दर्शाता है कि यहोवा उनका विशेष ईश्वर है, और वह उनके विशेष लोग हैं।

जिस तरह मर्दुक बेबीलोन का देवता था, जिस तरह एथेना एथेंस शहर की संरक्षक देवी थी, उसी तरह वे मानते थे कि यहोवा उनका देवता है। क्या वे मानते थे कि कोई अन्य देवता नहीं है? यह एक बड़ा सवाल है, आप जानते हैं? हमें नहीं पता कि वे वास्तव में इस निष्कर्ष पर कब पहुंचे। इसलिए, यहोवा को युद्ध के देवता के रूप में लोकप्रिय रूप से पहचाना जा सकता है।

और हम यह इसलिए जान सकते हैं क्योंकि पुराने नियम में उसे अक्सर युद्ध का आदमी कहा गया है। उसे अक्सर यहोवा सेनाओं के नाम से पुकारा जाता है। सेनाओं का मतलब है सेनाएँ।

तो यहोवा सेनाओं का देवता है, सेनाओं का देवता है। उसे बादलों पर सवार कहा जाता है। तो ऐसा लगता है कि वह तूफान के देवता की तरह हो सकता है, आप जानते हैं? वे यहोवा के बारे में क्या सोचते थे? खैर, कौन जानता है? आप निश्चित रूप से यह जान सकते हैं कि यह वह तरीका नहीं था जिस तरह से हम आधुनिक लोग, और विशेष रूप से आधुनिक धर्मशास्त्री, ईश्वर के बारे में सोचते हैं।

हाँ। बाइबल के कई अंशों में ईश्वरीय परिषद के बारे में बताया गया है। और मुझे लगता है कि यहाँ सबसे दिलचस्प अंश और चित्रण अय्यूब की पुस्तक की शुरुआत में आता है, जहाँ प्रभु ईश्वर के पुत्रों से मिल रहे हैं।

ईश्वर के पुत्रों का क्या अर्थ है? जाहिर है, इसका अर्थ है एक दिव्य परिषद, एक समूह। और जब आप इसे पढ़ते हैं तो यह बिल्कुल बोर्ड मीटिंग जैसा लगता है। उसे ईश्वर के सभी अलग-अलग पुत्रों से रिपोर्ट मिल रही है।

शैतान, विरोधी से भी एक रिपोर्ट मिलती है, जो उसे बताता है कि वह पूरी दुनिया में घूम रहा है और पूछ रहा है कि कौन भरोसेमंद है और कौन नहीं। लेकिन यह केवल एक अंश है। मेरा मतलब है, अन्य अंश भी हैं।

भजन संहिता की पुस्तक में हमें बताया गया है कि प्रभु एलोहिम, देवताओं के बीच अपना स्थान लेते हैं। हमारे पास अन्य अंश हैं जो दिव्य प्राणियों आदि के बारे में बात करते हैं। इसलिए पुराने नियम में कई जगहें थीं जो देवताओं की बहुलता की बात करती प्रतीत होती हैं।

बेशक, प्रभु उन सभी देवताओं से ऊपर हैं, लेकिन अन्य दिव्य प्राणियों के अस्तित्व की संभावना से इनकार नहीं करते। मुझे वाकई लगता है कि इस शुरुआती दौर में, कम से कम, और शायद थोड़े बाद में, इस्राएलियों के बीच यह भावना थी कि कोई भी आत्मा, एक तरह से, भगवान हो सकती है। उदाहरण के लिए, वे देवताओं और राक्षसों के बीच बहुत ज़्यादा अंतर नहीं करते थे।

वे देवताओं और स्वर्गदूतों के बीच भी बहुत ज़्यादा अंतर नहीं करते थे। प्राचीन निकट पूर्व में आम धारणा थी कि आत्मिक प्राणी दिव्य होते हैं। और इसलिए मुझे लगता है कि इस प्रारंभिक काल में बहुत ज़्यादा अस्पष्टता और बहुत ज़्यादा भ्रम है।

हे प्रभु, हे यहोवा, देवताओं में तेरे समान कौन है? तेरे समान कौन है, पवित्रता में राजसी, वैभव में विस्मयकारी, आश्चर्यकर्म करने वाला? निर्गमन 15.11. तो यहाँ यहोवा को अन्य देवताओं से श्रेष्ठ

बताया गया है, लेकिन जरूरी नहीं कि वह उनके अस्तित्व को नकारता हो। और यहोवा ने संख्या 33.4 में उनके देवताओं के विरुद्ध भी न्यायदंड निष्पादित किया। क्या इसका मतलब यह है कि अन्य देवता भी हैं? खैर, चलिए शुरू करते हैं। भजन 82.

ईश्वर ने दिव्य परिषद में अपना स्थान ग्रहण कर लिया है। देवताओं के बीच में, वह न्याय करता है। इसलिए इनमें से कई अंश बहुलता का संकेत देते प्रतीत होते हैं।

इस समय भगवान और उनके आस-पास के देशों के देवताओं के बीच क्या अंतर हैं? खैर, हमारे पास कोई आधिकारिक थियोगोनी नहीं है। अब, जब मैं आधिकारिक थियोगोनी के बारे में बात करता हूँ, और थियोगोनी, निश्चित रूप से, एक देवता की उत्पत्ति की कहानी है। देवता कहां से आते हैं? खैर, अधिकांश देवताओं के पास उनकी शुरुआत को दर्शाने वाली कहानियाँ थीं।

यहोवा के बारे में ऐसी कोई कहानी मौजूद नहीं है। या अगर थी भी तो बाइबल ने उसे खारिज कर दिया। इसे कभी बाइबल में शामिल ही नहीं किया गया।

इसलिए जबकि बेबीलोन या अशूर के लोग, मान लीजिए, इस बारे में बात कर सकते थे कि कैसे बाल ने एल को हटा दिया और देवताओं का राजा बन गया, बाइबल में ऐसी कोई कहानी संरक्षित नहीं थी। फिर से, हो सकता है कि उनके पास इस बारे में कहानियाँ हों कि क्यों और कैसे यहोवा दिव्य परिषद का मुखिया बन गया था, लेकिन बाइबल ने उन कहानियों को अस्वीकार कर दिया। वे आधिकारिक रूप से प्रकट सत्य का हिस्सा नहीं बने जो शास्त्रों में पाया जाता है।

यहोवा को सभी चीज़ों का निर्माता और पालनहार माना जाता है। यह विचार इस्राएली धर्म में कब आया? खैर, हम वास्तव में निश्चित नहीं हो सकते, लेकिन यह स्पष्ट है कि, बाल के विपरीत, यहोवा को वह माना जाता है जिसने न केवल यरूशलेम या इस्राएल को अस्तित्व में लाया, बल्कि सभी चीज़ों को भी अस्तित्व में लाया। और मिस्र के कुछ देवताओं और अन्य में इनमें से कुछ चीज़ों के कुछ समानताएँ थीं, लेकिन उतनी नहीं जितनी हम इस्राएल में यहोवा की समझ में पाते हैं।

और फिर नैतिकता का हिस्सा है। आप ग्रीक मिथकों को पढ़ते हैं, उनके देवताओं और उनके देवताओं के व्यवहार के बारे में कहानियाँ, और रोमनों के लिए भी यही बात है, जो मूल रूप से ग्रीक मिथकों को लेते हैं और उनके साथ चलते हैं। आप उन मिथकों को पढ़ते हैं, और ऐसा लगता है कि देवताओं ने वास्तव में बहुत बार बहुत बुरा व्यवहार किया।

मेरा मतलब है, वे हत्या करते हैं, वे व्यभिचार करते हैं, वे एक-दूसरे से झूठ बोलते हैं, वे मनुष्यों के साथ गंदगी जैसा व्यवहार करते हैं, वे बलात्कार करते हैं, और फिर भी, जब लोगों को न्याय की आवश्यकता होती है, तो वे देवताओं के पास जाते हैं और मांग करते हैं कि देवता उन्हें न्याय दें। लेकिन देवता स्वयं अन्यायी थे, आप जानते हैं? और आप मध्य पूर्व के लोगों के बीच कुछ इसी तरह के विचार देख सकते हैं, कि वे यह नहीं मानते थे कि उनके देवता नैतिकता का मॉडल हैं। और यह स्पष्ट रूप से पुराने नियम में थोड़ा अलग है।

परमेश्वर इस्राएल के लोगों से कहता है, तुम्हें पवित्र होना चाहिए क्योंकि मैं, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, पवित्र हूँ। अब, पवित्र का अर्थ नैतिक होना जरूरी नहीं है, लेकिन इसका कुछ नैतिक

अर्थ भी है क्योंकि ऐसा कहने के बाद, फिर प्रभु बाहर जाता है और अपने कुछ नियम और प्रस्ताव वगैरह बताता है, जो उसके पास हैं। तो, एक तरह से, परमेश्वर अपने लोगों की नैतिकता को अपनी नैतिकता पर आधारित करता है।

और वह अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि वे मानकों पर खरा उतरने का प्रयास करें, न केवल वह उनसे अपेक्षा करता है, बल्कि वह उनके लिए आदर्श भी है। अब, आइए इस आज्ञा को देखें। मेरे सामने तुम्हारे पास कोई अन्य देवता नहीं होना चाहिए।

इस बारे में बहुत से लोग जो सवाल उठाते हैं, उनमें से एक यह है कि इस वाक्यांश का क्या मतलब है? आप जानते हैं? मेरे सामने, इब्रानियों, आप जानते हैं, बस लिफ़नी, में बहुत सी अलग-अलग तरह की संभावनाएँ हो सकती हैं। इसका मतलब पहले से हो सकता है, इसका मतलब पूर्वता के साथ, ऊपर, या मेरी उपस्थिति में हो सकता है। इसलिए, हम कह सकते हैं, मेरे होने से पहले आपके पास कोई अन्य देवता नहीं होगा।

तो, दूसरे शब्दों में, पहले मुझे मेरा हक दो, और फिर तुम जो चाहो उसकी पूजा कर सकते हो। तुम्हारे पास कोई दूसरा देवता नहीं होगा जिसका दर्जा मेरे जैसा हो। यह एक और संभावना है।

या हम इसे इस अर्थ में समझ सकते हैं कि मेरी उपस्थिति में तुम्हारे पास कोई अन्य देवता नहीं होगा। खैर, प्रभु की उपस्थिति क्या है? संभवतः उस समय इस्राएल की समझ यह थी कि प्रभु की उपस्थिति जहाँ भी परमेश्वर के लोग हैं, वहाँ है। जहाँ भी परमेश्वर अपने लोगों के बीच मौजूद है, वहाँ कोई अन्य देवता नहीं होना चाहिए।

इसलिए, इसराइल को बताया जा रहा है कि इसराइल में कोई अन्य देवता नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि बाकी पेंटाटेच, साथ ही साथ भविष्यवक्ताओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि इसराइल के लिए पहली आज्ञा की समझ एक और केवल एक ईश्वर की पूजा करना है। इसलिए, मेरा मानना है कि मेरे सामने, भले ही यह अपने तात्कालिक संदर्भ में अस्पष्ट हो, लेकिन इसके बड़े संदर्भ में, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यहाँ क्या हो रहा है।

यह दूसरे देवताओं की पूजा करने पर प्रतिबंध है। सभी राष्ट्र अपने-अपने देवताओं के प्रकाश में चल सकते हैं, लेकिन हम हमेशा अपने प्रभु परमेश्वर के प्रकाश में चलेंगे। हमारा ईश्वर एक ही होगा।

हमें इस बात की परवाह नहीं है कि राष्ट्र क्या कर रहे हैं। हमारा ईश्वर एक है, केवल एक ईश्वर। तो क्या यह एकेश्वरवाद है, या कुछ और है? एकेश्वरवाद।

एकेश्वरवाद यह विचार है कि एक समय में आपके पास केवल एक ही ईश्वर होता है। एकेश्वरवाद यह विचार है कि केवल एक ही ईश्वर है। कोई अन्य ईश्वर मौजूद नहीं है।

हेनोथिज्म कहता है, ठीक है, अन्य देवता भी हो सकते हैं, लेकिन आप केवल एक की पूजा करते हैं। और जैसा कि मैंने कहा, इनमें से किसी एक के बारे में प्राचीन दुनिया में बहुत कम सुना गया है। कोई भी व्यक्ति केवल एक ईश्वर की पूजा नहीं करता था।

आपके पास बहुत सारे देवता थे। हर किसी के पास बहुत सारे देवता थे। अक्सर, एक मुख्य देवता होता है, लेकिन हर किसी के पास बहुत सारे अन्य देवता भी होते हैं।

मेरा मानना है कि यहाँ, फिर से, एकेश्वरवाद का विचार, यह विचार कि इस्राएलियों का मानना था कि केवल एक ईश्वर ही अस्तित्व में है, हम इसे प्राचीन निकट पूर्व में कहीं और नहीं देखते हैं। और वास्तव में, जिसे हम एकेश्वरवाद कह सकते हैं, उसके कुछ पहले संकेत 500 ईसा पूर्व के आसपास मिलते हैं। अब, मिस्र के उस काल के बारे में यह प्रश्न है जहाँ हमारे पास विधर्मी राजा अखेनातेन है, जिसने किसी को भी सूर्य डिस्क के अलावा किसी और की पूजा करने से मना किया था।

लेकिन वहाँ जो चल रहा है, वह वास्तव में वह नहीं है जिसे हम एकेश्वरवाद कहेंगे, क्योंकि यह इतना अधिक विचार नहीं था कि कोई अन्य देवता मौजूद नहीं था, क्योंकि वह खुद फिरौन को भगवान मानता था। आप जानते हैं? तो वह है, और वह पूरा काल थोड़ा सा संदिग्ध है, क्योंकि बाद की पीढ़ियों ने इसके बारे में सभी सबूतों को नष्ट करने की कोशिश की। इसलिए उस समय वास्तव में क्या चल रहा था, इसके बारे में बहुत सारी जानकारी प्राप्त करना मुश्किल है।

लेकिन मिस्र के धर्म के ज्यादातर विद्वान अखेनातेन के धर्म को एकेश्वरवाद नहीं कहेंगे। इसलिए हम जो जानते हैं वह यह है कि बाद के भविष्यवक्ताओं में, और हम इस बारे में शायद थोड़ी देर बाद बात करेंगे, लेकिन बाद के कुछ भविष्यवक्ताओं में स्पष्ट कथन हैं जो किसी अन्य देवता के अस्तित्व को नकारते हैं। इसलिए, जब मूसा के दिनों में पहली आज्ञा दी गई थी, तब इस्राइल को एकेश्वरवादी कहा जाता है।

उन्हें सिर्फ एक ईश्वर की पूजा करनी है। क्या कोई और भी संभावित ईश्वर हैं? हो सकता है, लेकिन हम उनकी पूजा नहीं करने जा रहे हैं। हम सिर्फ भगवान की पूजा करने जा रहे हैं, और सिर्फ वही हमारा ईश्वर है।

इसलिए भविष्यवक्ताओं ने घोषणा की कि इस्राएल को केवल प्रभु की पूजा करनी चाहिए, और फिर भी इस्राएल और यहूदा लगातार अन्य देवताओं की पूजा करने के लिए आकर्षित होते हैं। और यही वास्तव में मुद्दे का पूरा सार है। और जब आप इस पर गौर करते हैं तो यह वास्तव में दिल तोड़ने वाला है।

और सबूतों के बारे में कई बार बहस हुई है। एक बार तो यह तर्क दिया गया कि, ठीक है, भविष्यवक्ता अतिशयोक्ति कर रहे थे। वास्तव में, इस्राइल में इतनी मूर्तिपूजा नहीं थी।

और मैंने कुछ बहुत ही सम्मानित विद्वानों द्वारा यह तर्क दिया हुआ देखा है। लेकिन हाल ही में, पुरातत्वशास्त्र भविष्यवक्ताओं का समर्थन करता हुआ प्रतीत होता है। हम कुछ ऐसे सबूत देख रहे हैं कि वास्तव में इस्राइल में बहुदेववाद, अन्य देवताओं की पूजा, काफी हद तक प्रचलन था।

इसलिए अंततः, भविष्यवक्ता यह घोषणा करने के लिए आते हैं कि केवल एक ही ईश्वर है। यशायाह 44.6 को देखें। यह वही है जो प्रभु कहते हैं, इस्राएल के राजा और उद्धारक,

सर्वशक्तिमान प्रभु, मैं ही प्रथम हूँ, और मैं ही अंतिम हूँ, मेरे अलावा कोई अन्य ईश्वर नहीं है। यह एकेश्वरवाद कहे जाने वाले कथन की तरह लगता है।

और अगर यही एकमात्र बात होती, अगर यही एकमात्र कथन होता जो हमें मिलता, तो हम कह सकते थे, ठीक है, शायद यह सिर्फ अतिशयोक्ति या कुछ और या अलंकार का इस्तेमाल था। लेकिन नहीं, आप यशायाह की किताब को पढ़ें, और वह यशायाह के बाद के हिस्सों में बार-बार यह तर्क देता है कि सिर्फ एक ईश्वर है। और बाद में, हम आखिरी भविष्यद्वक्ताओं में पाएंगे कि यह सिर्फ अनुमान है।

इसलिए इस्राएल की प्रतिज्ञा, जो हम देखते हैं उसके आधार पर, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से, दासता के घर से बाहर लाया है। और हम एक तरह से निहित अर्थ देख सकते हैं। इसलिए, मेरे सामने तुम्हारा कोई अन्य देवता नहीं होगा।

मैं तुमसे यह माँग कर सकता हूँ क्योंकि मैंने तुम्हारे लिए जो किया है। क्योंकि मैंने यह लाभ पहुँचाया है, मैंने तुम्हें दिखाया है कि मैं क्या कर सकता हूँ। मैंने तुम्हें दिखाया है कि मैं मिस्र के देवताओं को कैसे हरा सकता हूँ।

आपको मुझ पर और सिर्फ मुझ पर भरोसा करना चाहिए। इसलिए, हम जो कह सकते हैं, वह यह है कि नहीं, आप उन सभी को नहीं पा सकते। आपको बेकर और व्यापारी और संगीतकार और डॉक्टर वगैरह नहीं मिलते।

आप इतने सारे अलग-अलग भगवान नहीं रख सकते। नहीं, आपको सिर्फ एक ही भगवान चुनना होगा। और वह भगवान भगवान है जो आपके सभी कामों में माहिर होगा।

तो हाँ, अगर हमारे पास कोई बड़ी समस्या है, तो हम आमतौर पर किसी विशेषज्ञ के पास जाते हैं, है न? लेकिन प्रभु इस्राएल से कह रहे हैं, मैं सिर्फ तुम्हारा सामान्यज्ञ नहीं हूँ, मैं तुम्हारा विशेषज्ञ भी हूँ। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी फसलें बढ़ें, तो तुम मेरे पास आओ। अगर तुम अपनी लड़ाई जीतना चाहते हो, तो तुम मेरे पास आओ।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी पत्नी बच्चे के जन्म के बाद जीवित रहे, तो मेरे पास आइए। और यह क्रांतिकारी था। यह उस समय मौजूद किसी भी अन्य साम्राज्य से अलग था।

ठीक है? तो बाइबल के संदर्भ में, यह विशेष आज्ञा एक बड़ी बात है, आप जानते हैं? वास्तव में, मैं कहूँगा कि यह सबसे बड़ी आज्ञाओं में से सबसे बड़ी आज्ञा है। पुरातात्विक और बाइबिल के साक्ष्य संकेत देते हैं कि इज़राइल आम तौर पर याहवे को प्राथमिक, कभी-कभी एकमात्र, ईश्वर के रूप में पूजता था। इतना तो स्पष्ट है।

और हम इसे जानने का एक तरीका यह है कि अगर आप बाइबल में नामों को देखें, तो ठीक है? और नामों में वह होता है जिसे हम थियोफोरिक तत्व कहते हैं। आप जानते हैं, थियोफोरिक तत्व ईश्वर का संदर्भ है। तो आपके पास एक नाम है, जैसे, मुझे नहीं पता, यिर्मयाह, या एक नाम, अंत में याह जिसे हम थियोफोरिक तत्व कहते हैं जो यहोवा का संदर्भ है।

या यशायाह, आप जानते हैं, अंत में याहू, यह प्रभु का संदर्भ है। तो, आप नामों को देखें, बाइबिल में अधिकांश नामों में ईश्वरीय तत्व हैं जो यहोवा को संदर्भित करते हैं। और उनमें से कुछ में ईश्वरीय तत्व हैं जो ईश्वर को संदर्भित करते हैं जैसे कि दानियेल, ईश्वर, मेरे न्यायाधीश।

पुराने नियम में बहुत कम नामों में ऐसे तत्व हैं जो बाल जैसे अन्य देवताओं को संदर्भित करते हैं, बहुत कम। वे कभी-कभी सामने आते हैं, आप जानते हैं? लेकिन वे बहुत दुर्लभ हैं। इसलिए ऐसा लगता है कि इसका प्रमाण बाइबल से है कि आम तौर पर लोग भगवान और केवल भगवान की पूजा करने के प्रति वफादार थे, ठीक है? लेकिन इस पहली आज्ञा की तुलना में इसराइल की विफलताओं के स्पष्टीकरण में किसी भी आज्ञा पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है।

इस्राएल को निर्वासन में क्यों जाना पड़ता है? वे अपने शत्रुओं से क्यों पराजित होते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे केवल प्रभु की ही पूजा नहीं कर रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अन्य सभी देवताओं की पूजा कर रहे हैं। यहजेकेल ने यह अद्भुत छवि बनाई है जहाँ उसे यरूशलेम में हो रही घटनाओं का दर्शन मिलता है।

उसे बेबीलोन ले जाया गया है, और वह बेबीलोन में बैठकर ये सारे अजीबोगरीब दृश्य देख रहा है। लेकिन उसके साथ जो कुछ हो रहा है, वह यह है कि परमेश्वर उसे आत्मा में वापस यरूशलेम ले जा रहा है, और वह देख पाता है कि मंदिर में क्या हो रहा है, और वह देखता है कि लोग मंदिर में मिस्र के देवताओं की पूजा कर रहे हैं। वे झुककर उगते सूरज की पूजा कर रहे हैं।

तो, और प्रभु उससे कहते हैं, यह ऐसी बात है जो तुम्हारे राष्ट्र को नष्ट कर देगी। वे दूसरे देवताओं की पूजा कर रहे हैं और यही सबसे बड़ी बात है, यही सबसे बड़ी वजह है कि भगवान अपने लोगों से नाराज़ हैं, है न? पुराने नियम की मूल बात को समझने की कुंजी, व्यवस्थाविवरण की पुस्तक शेमा है। तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे दिल से, अपने पूरे अस्तित्व से, अपनी पूरी शक्ति से प्रेम करना।

उस वाचा और सिर्फ उसी वाचा का पालन करने का आह्वान। अगर आप अपने भगवान से अपने पूरे दिल से, अपने पूरे अस्तित्व से और अपने मेलोडिका से प्यार करते हैं, जिसका आमतौर पर अनुवाद ताकत या ताकत या ऐसा कुछ होता है, जिसका मूल रूप से मतलब है कि आपके पास जो कुछ भी है। किसी अन्य देवता की पूजा करने के लिए कोई जगह नहीं है।

सब कुछ प्रभु के पास जा रहा है। इसलिए शेमा के आधार पर कई देवताओं की पूजा करने के लिए बहुदेववाद के लिए कोई जगह नहीं है। पहली आज्ञा का उल्लंघन करना इजरायल की सभी असफलताओं का मूल है।

वे बुरा व्यवहार क्यों कर रहे हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे प्रभु की आराधना नहीं कर रहे हैं। यह एक दिलचस्प बात है, इस तरह की बातों को नए नियम में शामिल करना। पॉल ने रोमियों के पहले अध्याय में एक बहुत ही दिलचस्प अवलोकन किया है, जब पॉल ने कहा कि ऐसा इसलिए है क्योंकि विशेष रूप से यूनानियों ने, वह यहाँ यूनानियों और रोमियों को निशाना बना रहा है,

क्योंकि उनके पास परमेश्वर के बारे में गलत विचार हैं, इसलिए उन्होंने परमेश्वर की महिमा को जानवरों और लोगों और इस तरह की चीजों के लिए बदल दिया है।

क्योंकि उनके पास ईश्वर के बारे में गलत विचार हैं, इसलिए वे बहुत अनैतिक हैं। क्योंकि ईश्वर उन्हें एक भ्रष्ट मन के हवाले कर देता है, इसलिए उनका धर्मशास्त्र गलत होने के कारण उनका व्यवहार ऐसा ही होता है।

और यही बात इस्राएल के साथ भी सच है। इस्राएलियों, यहूदियों, यहूदा के लोगों को बाद में सभी तरह के पापों के लिए परमेश्वर द्वारा दोषी ठहराया गया और उनका न्याय किया गया, लेकिन मूल रूप से यह इस तथ्य पर निर्भर करता है कि वे प्रभु के प्रति सच्चे नहीं रहे। और वे उसकी भलाई, उसके प्रेम को अस्वीकार कर रहे हैं।

पहला राजा नौ, छह से नौ, यदि तुम या तुम्हारे बच्चे मेरे पीछे चलने से विमुख हो जाते हो, और मेरी आज्ञाओं और विधियों का पालन नहीं करते जो मैंने तुम्हारे सामने रखी हैं, लेकिन दूसरे देवताओं की सेवा करते हो और उनकी पूजा करते हो, तो मैं इस्राएल को उस देश से काट डालूँगा जो मैंने उन्हें दिया है और उस भवन से जिसे मैंने उनके लिए पवित्र किया है। और अपने नाम के लिए, मैं इसे अपनी दृष्टि से दूर कर दूँगा। नहीं, यहाँ, यह नहीं कहा गया है कि वे लोगों की हत्या कर रहे हैं।

यह नहीं कहा गया है कि वे व्यभिचार कर रहे हैं या नहीं। यह नहीं कहा गया है कि वे चोरी कर रहे हैं या नहीं। यह कहा गया है, अगर वे जाकर दूसरे देवताओं की सेवा करेंगे, तो मैं उन्हें काट डालूँगा, ठीक है? यह घर खंडहरों का ढेर बन जाएगा, और हर कोई हैरान रह जाएगा।

और वे कहते हैं, प्रभु ने इस भूमि और इस भवन के साथ ऐसा क्यों किया? और वे कह सकेंगे, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्होंने प्रभु, अपने परमेश्वर को त्याग दिया। उनकी सभी परेशानियों की जड़ यही है कि वे पहली आज्ञा का पालन करने में विफल रहे। इसलिए प्रभु के प्रति सच्चे न होने की बात यिर्मयाह, यहेजकेल, होशे और अधिकांश अन्य भविष्यवक्ताओं का भी मुख्य विषय है, कुछ अपवादों के साथ।

बेबीलोन के निर्वासन के समय में विदेशी देवताओं के प्रति मोह शायद इसराइल में खत्म हो गया था। हम ऐसा क्यों कह सकते हैं? क्योंकि जब आप निर्वासन के बाद के भविष्यवक्ताओं के पास जाते हैं, तो वे अब इस विषय पर जोर नहीं देते हैं। ऐसा लगता है कि अब यह मुद्दा नहीं है।

एक बार जब इस्राएल ने कठिनाइयों का सामना किया, निर्वासन से गुज़रा, और फिर घर वापस लौटा, तो विदेशी देवताओं के प्रति उनका मोह काफी हद तक समाप्त हो गया। उदाहरण के लिए, आप इसे इतिहास की पुस्तक में देख सकते हैं। यह धर्मत्याग की समस्या को नज़रअंदाज़ नहीं करता है, लेकिन यह इसे बहुत कम करके आँकता है।

और राजाओं की किताबों में, इस्राएल के राजाओं द्वारा प्रभु के प्रति वफादार न रहने के बारे में बार-बार उल्लेख किया गया है। सुलैमान को उसके सभी मूर्तिपूजक देवताओं और इसी तरह की

अन्य बातों के लिए चुना गया है। आप इतिहास की किताब में पढ़ते हैं कि वे इसका उल्लेख तक नहीं करते हैं।

वे बस इसे अनदेखा कर देते हैं। क्यों? क्योंकि अब यह कोई समस्या नहीं है। उन्हें इस समय इस बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

एज्रा और नेहम्याह स्वीकार करते हैं कि अंतर्जातीय विवाह एक संभावित समस्या थी जो धर्मत्याग को जन्म दे सकती थी, लेकिन वे अपने समय में धर्मत्याग को एक मुद्दे के रूप में नहीं देखते हैं। हागै और जकर्याह पंथ की पुनर्स्थापना पर ध्यान केंद्रित करते हैं। मलाकी पंथ और सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है, लेकिन इस तथ्य के बारे में कोई चिंता नहीं दिखाता है कि उस समय इज़राइल मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा कर रहा था, क्योंकि जाहिर तौर पर वे ऐसा नहीं कर रहे थे।

अब, दूसरी ओर, इस्राएल की भूमि के बाहर, जहाँ यहूदी अन्य स्थानों पर बिखरे हुए हैं, वहाँ इस बात के प्रमाण हैं कि यहूदी प्रभु के प्रति उतने वफ़ादार नहीं थे, जितने कि वे इस्राएल की भूमि में थे। हमारे पास मिस्र के साम्राज्य से, मिस्र में इस्राएली उपनिवेश से अमरना पत्र हैं।

और हम वहाँ बहुत सारे सबूत देखते हैं, जिसे हम भगवान के साथ-साथ अन्य देवताओं की पूजा का समन्वय कहते हैं। हम देखते हैं, एस्तेर की पुस्तक में भी, कि हमारे पास दो नायक हैं, एस्तेर और मोर्दैकै, जिनके दोनों के नाम मूर्तिपूजक देवताओं के नामों पर आधारित हैं। एस्तेर, देवी इश्तार के नाम पर आधारित है, और मोर्दैकै का नाम मर्दुक से आया है।

इसलिए हमारे पास स्पष्ट रूप से भूमि के बाहर ऐसे मुद्दे हैं जहाँ लोग उन सीमाओं को बनाए रखने के बारे में बहुत सावधान नहीं हैं। लेकिन इज़राइल के भीतर, ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने काम को एक साथ कर लिया है। अंतर-नियम अवधि के दौरान समन्वयवाद के साथ एक संक्षिप्त छेड़खानी हुई थी।

हुए पूरे एंटीओचियन विद्रोह की शुरुआत हुई। लेकिन मूल रूप से, मैकाबीज़ की पुस्तक हमें बताती है कि यरूशलेम में भूमि के कुछ लोगों ने फैसला किया कि यह उनके लिए बेहतर होगा यदि वे स्वर्ग के भगवान की पूजा करना शुरू कर दें जैसा कि उनके आसपास के सभी अन्य राष्ट्र करते थे। हर कोई अपने मुख्य देवताओं की पहचान ज़ीउस, ज़ीउस यूरेनस से करने लगा था।

और इसलिए यरूशलेम के भीतर ऐसे लोग थे जो कह रहे थे, अरे, हमें भी इसमें शामिल होना चाहिए, क्योंकि अगर वे प्रभु को ज़ीउस के साथ पहचानते हैं तो कुछ कर लाभ मिल सकते हैं। यह एक और कहानी है। लेकिन किसी भी दर पर, इस पर एक संक्षिप्त छेड़खानी हुई।

मैंने एक समन्वयवादी धर्म को रट लिया, जो कहता है कि हम सभी अलग-अलग नामों से एक ही ईश्वर की पूजा कर रहे हैं। लेकिन हाँ, यह बहुत लंबे समय तक नहीं चला। नए नियम के बारे में क्या? क्या हम नए नियम में पहली आज्ञा देखते हैं? वास्तव में, नए नियम में पहली आज्ञा का कभी उल्लेख नहीं किया गया है।

दिलचस्प है। लेकिन हमारे पास इसका सकारात्मक सूत्रीकरण है, जिसे शेमा कहा जाता है, जिसे यीशु द्वारा दी गई सबसे बड़ी आज्ञा कहा जाता है। यीशु कहते हैं, सबसे बड़ी आज्ञा क्या है? अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल, आत्मा और दिमाग से प्यार करो।

यह मूलतः सकारात्मक रूप में पहली आज्ञा है। इसलिए यीशु कहते हैं कि यहीं से सब कुछ शुरू होता है। यह सबसे बड़ी आज्ञा है।

और पॉल कहते हैं कि बुतपरस्त देवता कुछ भी नहीं हैं। एक बिंदु पर, वह 1 कुरिन्थियों में कहता है, "हम जानते हैं कि बुतपरस्त देवता अस्तित्व में ही नहीं हैं। 1 कुरिन्थियों 10 में, वह कहता है, ठीक है, बुतपरस्त देवता राक्षस हैं।

अपना मन बना लो, पॉल। वैसे भी, वह ईसाइयों से मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा में भाग न लेने का आग्रह करता है, जो एक बुद्धिमानि भरा कदम लगता है। आप जानते हैं, आप यहाँ ऐसे लोगों से निपट रहे हैं जो ईसाई धर्म और एक ईश्वर की बातों से नए हैं।

इसलिए वह उन तक संदेश पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। लेकिन नए नियम की दुनिया में और शुरूआती चर्च की दुनिया में, भले ही स्पष्ट रूप से मूर्तिपूजक देवता हैं, उस समय दुनिया में चल रही पूरी धर्म व्यवस्था अजीबोगरीब है क्योंकि आपके पास अभी भी पुराने बुतपरस्ती के अवशेष हैं, पुराने ग्रीक और रोमन देवताओं की पूजा वगैरह। और आपके पास मिथ्रास पंथ जैसी चीजें हैं, और आपके पास अन्य बुतपरस्त धर्म हैं जो हर जगह उभर रहे हैं जो विभिन्न प्रकार के देवताओं की पूजा करते हैं।

फिर आपके पास राज्य पंथ है, आप जानते हैं, रोम की आत्मा की पूजा जैसी चीज़। लेकिन अधिकांश भाग के लिए, ईसाई इस समझ के प्रति बहुत सच्चे थे कि उन्हें एक ईश्वर और केवल एक ईश्वर की पूजा करनी थी। और कई लोग उस आज्ञा का उल्लंघन करने के बजाय अपनी जान देने को तैयार थे।

ठीक है, तो चलिए अब इस तरह की बात को यहाँ घर पर लाते हैं। मेरे लिए इसका क्या मतलब है? हम प्राचीन रोम की दुनिया में नहीं रहते हैं। हम प्राचीन इज़राइल की दुनिया में नहीं रहते हैं।

हम आधुनिक अमेरिका में रहते हैं। और, आप जानते हैं, कुछ मायनों में, यह एक अजीब तरह की भयावहता है कि हम अपने तरीके से प्राचीन रोम की तरह बनने लगे हैं, क्योंकि हमारे समाज में बहुत सारे अलग-अलग धर्म हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि हमारे देश में अब एपिस्कोपेलियन की तुलना में बौद्ध धर्म के अनुयायी अधिक हैं।

अब, हमारे देश में सबसे तेजी से बढ़ता धार्मिक समूह वह समूह है जो खुद को उपरोक्त में से कोई नहीं के रूप में पहचानता है, आप जानते हैं, जब वे चेक लगाते हैं। जब मैंने 30 साल पहले अपनी किताब लिखी थी, तो मैं कह सकता हूँ कि 80% से अधिक अमेरिकी ईसाई होने का दावा करते थे। सबसे हालिया सर्वेक्षण में, 63% अमेरिकी ईसाई होने का दावा करते हैं।

हमारे यहां मुसलमानों का समूह बढ़ रहा है। हमारे यहां बौद्धों का समूह बढ़ रहा है। हमारे यहां हिंदू हैं, हालांकि उतने नहीं, लेकिन हमारे यहां कई तरह के धर्म हैं।

और हमारे जैसे समाज में, यह ठीक है। हमें इस तथ्य को पहचानना होगा कि भगवान ने हमें अपने समाज को मूर्तिपूजक देवताओं से मुक्त करने का आदेश नहीं दिया है। उसने हमें अपने दिलों को मूर्तिपूजक देवताओं से मुक्त करने का आदेश दिया है, न कि हमारे समाज को मूर्तिपूजक देवताओं से मुक्त करने का।

पॉल ने कभी भी यरुशलम से सम्राट की मूर्तियों को हटाने या इस तरह की किसी भी चीज़ के लिए याचिका दायर करने की कोशिश नहीं की। देश को ईसाई बनाने की कोशिश करने के लिए राजनीतिक बल का उपयोग करने का विचार, यह कुछ ऐसा है जो थोड़ा बाद में आता है और ऐसा लगता है कि यह एक बड़ी गलती थी, ईसाई धर्म और चर्च द्वारा एक बड़ी चूक। तो हाँ, हमें पहचानना चाहिए, ठीक है, वहाँ अन्य धर्म भी हैं और हमें उन चीज़ों के प्रति सहिष्णु होने की आवश्यकता है, लेकिन हमें यह भी पहचानना होगा कि नहीं, सभी धर्म एक ही ईश्वर की पूजा नहीं कर रहे हैं।

और हमने इसे सुना है। हमने इसे हमारे राष्ट्रपतियों से सुना है, वास्तव में, संयुक्त राज्य अमेरिका के, यह कहते हुए, ठीक है, आप जानते हैं, हम सभी एक ही भगवान की पूजा करते हैं, बस अलग-अलग नामों से, बकवास, यह सच नहीं है। आप जानते हैं, देवताओं के गुण अलग-अलग हैं।

देवताओं की अवधारणाएँ अलग-अलग हैं। ईश्वर कौन है, इस बारे में हमारी अलग-अलग समझ है, और ईश्वर तक पहुँचने का तरीका एक जैसा नहीं है। उनकी पूजा भी एक जैसी नहीं होती।

तो हमारे लिए इसका क्या मतलब है? खैर, आप जानते हैं, जब बात विश्वव्यापीकरण, विश्वव्यापी कार्यवाहियों और इसी तरह के सहयोग की आती है, तो यहाँ बहुत से अलग-अलग तरह के ईसाई हैं, और हम अपने बाहरी रूप में भिन्न हैं, लेकिन ज़्यादातर मामलों में, हम इस बात पर सहमत हैं कि ईश्वर कौन है। कुछ छोटी-छोटी बातों पर हमारे विचारों में कुछ मतभेद हैं, लेकिन ज़्यादातर मामलों में, हम सभी इस बात पर सहमत हैं कि हम एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं। और इसलिए मेरे लिए एपिस्कोपल चर्च या लूथरन चर्च या बैपटिस्ट चर्च या प्रेस्बिटेरियन चर्च और यहाँ तक कि, आप जानते हैं, सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट जैसे समूहों में जाने और उनके साथ पूजा में हिस्सा लेने में कोई समस्या नहीं है क्योंकि सच्चाई यह है कि हम सभी ईश्वर कौन है, इस बारे में एक ही पृष्ठ पर हैं।

और भले ही मुझे वेदी की मेज के पीछे जो हो रहा है वह पसंद न हो, या मैं भोज तक सीमित पहुंच या इस तरह की किसी चीज़ के विचार से असहमत हूँ, फिर भी हम इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि भगवान कौन है। लेकिन जब बात आती है, जैसे कि किसी बौद्ध मंदिर या शिंटो चाय उत्सव या इस तरह की किसी चीज़ में पूजा करने की, तो मुझे लगता है कि हमारे लिए संयम से काम लेने की जगह है क्योंकि वे उसी ईश्वर की पूजा नहीं कर रहे हैं जिसकी हम पूजा करते हैं। मुझे लगता है कि हम किसी बौद्ध मंदिर में जा सकते हैं और विनम्र मेहमान बन सकते हैं।

मुझे लगता है कि हम न केवल अपने पड़ोसियों के बारे में सीख सकते हैं, बल्कि अपने पड़ोसियों की धार्मिक मान्यताओं के बारे में भी जान सकते हैं, और शायद दूसरे धर्मों के अध्ययन के माध्यम से भगवान के साथ अपने रिश्ते के बारे में भी थोड़ा-बहुत सीख सकते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि दूसरी संस्कृतियों के धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेना ही वह जगह है जहाँ हमें सीमा खींचनी चाहिए।

क्या भगवान हमें मार डालेंगे? जाहिर है, नहीं, आप जानते हैं? लेकिन मुझे लगता है कि ऐसा करके हम पहली आज्ञा का उल्लंघन करने का जोखिम उठाते हैं। अब आइए थोड़ा और आध्यात्मिक हो जाएं। आइए हम वापस जाकर समझें कि भगवान से हमारा क्या मतलब है।

ईश्वर वह है जिसे हम शक्ति प्रदान करते हैं। ईश्वर शब्द का मूल अर्थ यही है, जो शक्तिशाली है। मार्टिन लूथर ने कहा, आपका दिल जिस चीज से जुड़ा है और जिस पर भरोसा करता है, वही आपका ईश्वर है।

मुझे यह बहुत पसंद है। यह इस बात की अद्भुत समझ है कि हम ईश्वर से कैसे संबंध रखते हैं। और मार्टिन लूथर यहाँ बिल्कुल सही हैं।

आप जानते हैं, बहुत से लोग कहते हैं कि आपका ईश्वर वह है जिसे आप सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं। मैं इससे सहमत नहीं हूँ। मुझे वाकई लगता है कि मार्टिन लूथर ने यहाँ सही कहा है।

यह वह है जिससे आप चिपके रहते हैं, जिस पर आप भरोसा करते हैं, जिस पर आप भरोसा करते हैं। यही आपका ईश्वर है। और हम जानते हैं कि हमारे समाज में, ऐसी बहुत सी अलग-अलग चीज़ें हैं जिन पर लोग भरोसा करते हैं या जिनके बारे में सोचते हैं या जिन पर निर्भर रहते हैं, ऐसी चीज़ें जो हमारे ईश्वर बन सकती हैं।

ऐसे लोग भी हैं जो उम्मीद कर रहे हैं कि एलियंस उन्हें बचा लेंगे, आप जानते हैं, जो उम्मीद कर रहे हैं कि छोटे भूरे आदमी आएंगे और इस सारी गड़बड़ को ठीक करेंगे जो हमारे पास है। बेशक, सर्वशक्तिमान डॉलर है, जिसे हम एक कारण से सर्वशक्तिमान डॉलर कहते हैं। और ऐसे लोग भी हैं जो सरकार में ईश्वरीय आस्था रखते हैं।

और ये सभी चीज़ें मूर्तियाँ हैं। ये सभी नकली भगवान हैं। और जिन चीज़ों से हम चिपके रहते हैं और भगवान के अलावा किसी और पर भरोसा करते हैं, जिन चीज़ों से हम उम्मीद करते हैं कि भगवान के अलावा कोई और हमारी ज़रूरतें पूरी करेगा, मेरा मानना है कि वे इस आज्ञा का उल्लंघन हैं।

विज्ञान, बेशक, हमारे समय और युग में एक बड़ी चीज है। ऐसे कई लोग हैं जो उम्मीद करते हैं कि विज्ञान हमारी सभी समस्याओं का समाधान कर देगा, आप जानते हैं? और सोचते हैं कि एक दिन, हमारे पास जो भी मुद्दे हैं, भूख के मुद्दे, अन्याय के मुद्दे, वैज्ञानिक जांच से हल हो सकते हैं। मुझे विज्ञान पसंद है।

मैं विज्ञान का शौकीन हूँ, लेकिन विज्ञान का काम यहीं तक सीमित नहीं है। हम उससे चिपके नहीं रह सकते और उस पर निर्भर नहीं रह सकते। और, ज़ाहिर है, ऐसे लोग भी हैं जो दूसरों पर निर्भर रहते हैं।

हम उन्हें सह-निर्भर कहते हैं, जो लोग दूसरों से चिपके रहते हैं और अनिवार्य रूप से उन लोगों को अपना भगवान बना लेते हैं और उनसे अपनी सभी ज़रूरतें पूरी करने की उम्मीद करते हैं। कोई भी व्यक्ति हमारी सभी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उस स्थिति में नहीं हो सकता। किसी के पास उस तरह की शक्ति नहीं है।

किसी के पास उस तरह का अधिकार नहीं है। किसी के पास इतनी पहुंच और क्षमता नहीं है कि वह सामान्यीकरण कर सके और इतनी सारी अलग-अलग ज़रूरतों को पूरा कर सके। केवल भगवान ही ऐसा कर सकते हैं।

और इसलिए, आप जानते हैं, यह वह प्रश्न है जो हमें खुद से पूछना चाहिए। वास्तव में हम किससे चिपके हुए हैं? वास्तव में हम किस पर निर्भर हैं? हमने किसे अपना भगवान बना लिया है? और यह आज भी हमारे लिए पहली आज्ञा की चुनौती है। यीशु ने हमें बताया, अपने प्रभु परमेश्वर से अपने पूरे दिल से, अपने पूरे दिमाग से, अपनी पूरी आत्मा से, अपने पूरे अस्तित्व से प्यार करो, क्या आप जानते हैं? और यह हमारे जीवन में अन्य देवताओं और अन्य शक्तियों के लिए उनकी जगह लेने की जगह नहीं छोड़ता।

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2 है, आज्ञा 1: कोई अन्य देवता नहीं।